Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

भारतीय परमाणु नीति का अंतराष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIII, January-2014, ISSN 2230-7540

भारतीय परमाणु नीति का अंतराष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव

Ravi Shankar Sarkar*

Research Scholar, Department of Political Science, Lalit Narayan Mithila University, Kameshwaranagar, Darbhanga, Bihar

सार - ***भारत की रक्षा और सुरक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए हमें यह विचार कर लेना चाहिए कि वर्तमान समय में भारत की परमाणु नीति क्या है और भविष्य में वह किस प्रकार की हो सकती है अथवा इसे किस प्रकार की होनी चाहिए। हमें इस विषय पर गहन चिंतन व विश्लेषण करने के बाद ही कोई निष्कर्ष निकालना चाहिए, क्योंकि जल्दबाजी में निर्धारित की गई परमाणु नीति देश के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। हम स्वंय कोई निष्कर्ष निकालें, इससे पहले हम सभी को भारत सरकार की वर्तमान तथा भावी नीतियों के विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए, यह हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है। जहाँ तक भारत की विदेश नीति का प्रश्न है, निःसंदेह किसी भी गुट का शिकार न बनने की है। जैसा कि हम सभी यह अच्छी तरह जानते हैं कि भारत सभी प्रकार के विवादों से दूर रहकर शांतिपूर्ण तरीके से हल करने में भी पूर्ण आस्था रखता है। जहाँ तक अणु शक्ति को प्रयोग में लाने का प्रश्न है तो भारत सदैव इस बात पर बल देता रहा है कि इसका प्रयोग शांतिपूर्ण कार्यों हेतु किया जाना चाहिए। भारत संपूर्ण निरस्त्रीकरण पर बल देता रहा है।***

----------X----------

पूर्व की परमाणु नीतिः

अक्टूबर 1962 में चीन के आक्रमण के बाद तथा उसके द्वारा अक्टूबर 1964 में सिक्यिांग में अपना प्रथम अणु विस्फोट कर लेने के बाद लाल बहादुर शास्त्री ने लोक सभा में यह कहा कि चीन द्वारा उत्पन्न इस खतरे के बावजूद उनकी सरकार परमाणु हथियारों का निमार्ण करने का निर्णय नहीं लेगी, बल्कि इन घातक हथियारों को विश्व से समाप्त करने के लिए ही पैरवी करती रहेगी। वे इन शक्तियों का प्रयोग केवल अच्छे कार्यों के लिए या मानव हित से जुड़ी हुई समस्याओं का समाधान करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। क्योंकि जनता को इससे लाभ होगा।[1]

मार्च 1977 में भारत के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई तथा पूर्व विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी विगत 31 वर्षों से चली आ रही परमाणु नीति का ही समर्थन किया। उन्होनें यह भी कहा कि वह परमाणु शक्ति का प्रयोग शांतिपूर्ण कार्यों के लिए ही करेगा। वह आने वाले समय में परमाणु हथियारों का उत्पादन नहीं करेगा। 9 जून 1978 को मोरारजी देसाई ने संयुक्त राज्य संघ द्वारा आायोजित निरस्त्रीकरण सम्मेलन में यह भी कहा था कि भारत ही एक ऐसा देश है जिसने प्रतिज्ञा की कि वह न तो परमाणु हथियारों को निर्मित करेगा और ना ही किसी अन्य देशों से प्राप्त करेगा, चाहे विश्व का कोई भी राष्ट्र ऐसा क्यों न कर ले। श्रीमती इंदिरा गाँधी ने पुनः दोहराया कि भारत शांतिपूर्ण कार्यों के लिए परमाणु विस्फोट; Peaceful करने का अपना अधिकार सुरक्षित रखता है। इसके बाद अटल बिहारी वाजपेयी जी सरकार ने मई 1998 में परमाणु बम विस्फोट कराकर इन्हीं परिवर्तन से जो देश कभी भारत की कटु आलोचना करते थे वह आज सहयोग के लिए तत्पर हैं।[2] 18 मई 1974 को राजस्थान में जैसलमेर में पोखरण क्षेत्र में किए गए अणु विस्फोट में उपर्युक्त को सिर्फ सत्य सिद्ध करके दिखा दिया।

इस प्रकार परमाणु क्लब का अनचाहा सदस्य बन गया। भारत के इस आण्विक विस्फोट के बाद अमेरिका ने दक्षिण एशिया में भारत को एक बड़ी शक्ति की मान्यता दे दी। भारत के इस परमाणु परीक्षण ने विश्व में तहलका मचा दिया था। पूर्व सोवियत संघ ने भी भारत के इस विस्फोट को वैज्ञानिक ज्ञान अर्जित करने की संज्ञा दी। युगोस्लाविया ने भी भारत द्वारा किए परीक्षण पर स्वागत किया तथा भारत से इस बात की आशा की कि वह इनका प्रयोग शांतिपूर्ण कार्यों के लिए करेगा। इस परीक्षण को अनेक देशों ने सराहा तो ब्रिटेन के समाचार पत्रों में इस विस्फोट की कटु आलोचना की गई थी।

www.ignited.in

अमेरिका के रक्षा सचिव ने भी परमाणु प्रसारण को खतरनाक वस्तु कहा तो उस समय दूसरी ओर पाकिस्तान के जुल्फिकार अली भुट्टो ने भी इस विस्फोअ की कटु आलोचना की थी और कहा था कि भारत ने अप्रसार संधि (एन0 पी0 टी0) को डॉयनामाइट ने उड़ाकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उन्होंने भी पाकिस्तान में परमाणु बम बनाने का निश्चय किया और कहा कि "चाहे पाकिस्तान की जनता को घास की रोटी खाकर ही क्यों न रहना पड़े, लेकिन वह इसे अवश्य बनाएँगे।[3]

भारतीय विस्फोट से परमाणु शक्ति पर वर्षों से चले आ रहे महाशक्तियों के एकाधिकार आघात पहुंचा। इसके अतिरिक्त, भारत के परमाणु समुदाय में सम्मिलित होने से परमाणु देशों की एक नयी श्रेणी का जन्म हुआ। अब तक जो परमाणु देश रहे उन सभी देशों ने विध्वंसक हथियारों का निर्माण करने में अपनी शक्ति का उपयोग किया और हथियारों के इस निर्माण को यह कहकर उचित ठहराया कि इन हथियारों का प्रयोग आक्रमणकारी उद्देश्यों के लिये न करके केवल रक्षात्मक उद्देश्यों के लिये किया जायेगा। परंतु भारत किसी भी स्थिति में शस्त्र-निर्माण के लिये परमाणु शक्ति का उपयोग करने के पक्ष में नहीं है।

यह सच है कि महाशक्तियाँ भी समय-समय पर परमाणु ऊर्जा केशांतिपूर्ण उपयोग की आवश्यकता पर बल देती रही हैं। परंतु उनकी यह प्रवृत्ति रही है कि परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में किये जाने वाले अनुसंधान की संपूर्ण प्रक्रिया पर उनका एकाधिकार बना रहे ताकि यदि विकासशील देश शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु शक्ति का उपयोग करना चाहे तो भी उन्हें महाशक्तियों पर आश्रित रहना पड़े।[4]

भारत ने जो विस्फोट किया उससे विश्व समाज के सामने निरस्त्रीकरण की समस्या का एक नया आयाम उभर कर आया है और वह यह है कि यदि हम परमाणु अनुसंधान केवल शांतिपूर्ण उददेश्यों को ही ध्यान में रखकर करें तो शस्त्र-नियंत्रण और अप्रचुरण की समस्या स्वयं हल हो जायेगी। अप्रचुरण का अर्थ यह नहीं है कि महाशक्तियों के अतिरिक्त किसी अन्य देश को परमाणु ऊर्जा के बारे में ज्ञान नहीं होना चाहिए। अप्रसार या अप्रचुरण का वास्तविक अर्थ यह है कि किसी भी देश के पास परमाणु अस्त्रों का कोई भंडार न हो। अतएव, यद्यपि भारत ने अप्रचुरण संधि का हस्ताक्षर नहीं किये हैं, परंतु फिर भी उसने इस संधि के मुख्य उद्देश्य को इस आधार पर बढ़ावा दिया है कि परमाणु अनुसंधान का प्रयोग केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिये ही करना चाहिये।

भारत सदैव निरस्त्रीकरण का पक्षधर रहा है। निरस्त्रीकरण विषयकसंयुक्त राष्ट्र महासभा का दूसरा विशेष अधिवेशन 7 जून से 10 जुलाई सन् 1982 को न्यूयार्क में हुआ। प्रारंभिक समिति का सदस्य होने के नाते भारत ने अन्य गुट-निरपेक्ष देशों के साथ मिलकर यह प्रयत्न किया कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का ध्यान नाभकीय युद्ध को रोकने और नाभकीय निरस्त्रीकरण से संबंधित विषयों पर केन्द्रित रहे। भारत ने कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव किये। इनमें नाभकीय हथियारों पर रोक से संबंधित एक संकल्प का प्रारूप भी था।[5]

हालांकि भारत ने एन0पी0टी0 और सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर नहीं किये हैं परंतु भारत ने संपूर्ण निरस्त्रीकरण की बात की है। वांशिगटन-स्थित अमेरिकी थिंक टैंक संस्थान हेनरी एल0रिटम्सन केन्द्र के अध्यक्ष माइकेल क्रेपन ने दुनिया के विभिन्न समाचार-पत्रों में परमाणु परीक्षणों को प्रतिबन्धित करने वाली संधि (सी0टी0बी0टी0) के समर्थन में एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने बहुत ही साहस के साथ अपने देश संयुक्त राज्य अमेरिका-सहित शेष चार परमाणु शक्तियों (ब्रिटेन, फ्रांस, रूस एवं चीन) की परमाणु-नीति की न केवल आलोचना की है, बल्कि भारत की परमाणु निरस्त्रीकरण-नीति का समर्थन भी किया है।

व्यापक परीक्षण प्रतिबन्ध संधि के पूर्व 1996 में चीन में प्रक्षेपास्त्रों का परीक्षण और फ्रांस का परमाणु परीक्षण निश्चित रूप से एक चिन्ता का विषय रहा है। वर्तमान में विश्व में शांति का वातावरण कायम करने की बात चारों ओर से उठ रही है, ऐसे में चीन और फ्रांस के इन परीक्षणों से अवश्य ही एक संशय का वातावरण बन गया था। फ्रांसीसी राष्ट्रपति जैक्वेस शिराक की इस घोषणा से कि अब उनका देश विश्व भर में निरस्त्रीकरण के लिये काम करेगा और यूरोप की रक्षा-व्यवस्था में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, विश्व शांति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हो सकती है।[6]

यह सर्वमान्य है कि ऐसे संहारक अस्त्रों की समाप्ति के बाद ही विश्व में शांति का वातावरण उत्पन्न किया जा सकता है, परंतु विगत में संपन्न संधियों का कोई परिणाम नहीं निकला है। इसलिये यह अत्यंत आवश्यक है कि अणुशस्त्रधारी राष्ट्र अपनी सैनिक तैयारियों पर थोड़ा बहुत अंकुश लगायें।

आज पश्चिमी एशिया भी शस्त्रों की स्पर्धा में लिप्त है, जिसका प्रमुख कारण उनके मध्य एक-दूसरे के प्रति संदेह है जिसके परिणामस्वरूप आज संयुक्त राज्य अमेरिका सहित समस्त अणु संपन्न राष्ट्र अपने शस्त्रों की बिक्री इस क्षेत्र में कर के अपनी अर्थव्यस्था को सुदृढ़ बनाने पर तले हुए हैं। इसलिए पश्चिमी एशियाई राष्ट्रों को आपस के मतभेद को भुलाकर शस्त्रों की होड़ को रोकना होगा, तभी पश्चिम एशिया में शांति का वातावरण निर्मित हो सकता हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूचीः

1. कामथ, पी.एम. (1999): इंडियन न्यक्लियर पॉलिसी फ्रॉम आइडियलिज्म टू रीयलिज्म, प्रिन्टवेल पब्लिसर्स, जयपुर, पृ0 48-54

2. कृष्णानन्द शुक्ल (2008): विश्व का परमाणु संकट और भारत की परमाणु नीति, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 65-73

3. कुमार, अशोक (1976): इंडियाज न्यूक्लियर ऑप्शन: एटोमिक डिप्लोमेशी एण्ड डिसिजन मेकिंग, न्यूयार्क, पृ-112-118

4. गुप्ता पी0राम (1985): न्यूक्लियर डिसअर्मामेंट, प्रकाश बुक डिपोट, बरेली, पृ. 36-42

5. चैधरी, जी0डब्लयू. (1982) इन वल्र्ड अफेयर्सः द फॉरेन पॉलिसी ऑफ़ चाइना सिंस 1970 (कोलार्दो) पृ0 85-93

6. जैन, पुष्पेश पंत (2000): अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृ0 55-68

Corresponding Author

Ravi Shankar Sarkar*

Research Scholar, Department of Political Science, Lalit Narayan Mithila University, Kameshwaranagar, Darbhanga, Bihar